**नोट -**

1. नवीन छात्रों की उच्चारण शुद्धि हेतु अमरकोष पढ़ाएँ (समयानुसार)।
2. वेदमन्त्रों की अक्षुण्ण परम्परा को बनाए रखने हेतु प्रत्येक छात्र का उच्चारण एवं स्वर शुद्ध हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए छात्रों को उच्चारण स्थान इत्यादि से परिचित कराये।
3. नवीन छात्रों से उनका गोत्र, शाखा इत्यादि ज्ञात कर उसको स्वशाखाध्ययन कराने का प्रयत्न करें।
4. प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का गुरुमुख से सम्पूर्ण अध्यापन एवं स्वाध्याय पूर्वक कण्ठस्थीकरण उसी वर्ष में पूर्ण करना अनिवार्य है।
5. छात्रों को परम्परागत सस्वर अध्ययन पद्धति से ही वेद अध्यापन कराना अनिवार्य है। जैसे -

   16 सन्था पद्धति

   अथवा

   10 पाठ

   10 वल्लि/दशावृत्ति/सन्था
6. प्रत्येक माह के अन्त में (पढाये गए विषयों की) मासिक परीक्षा कर छात्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारण आदि की स्थिति का अवलोकन करें। यदि न्यूनता हो तो पूर्ण करें।
7. छात्रों की उच्चारण शुद्धि एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या के पश्चात् विष्णुसहस्त्रनाम, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्, अन्नपूर्णास्तोत्रम्, भजगोविन्दम्, प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम्, रामरक्षास्तोत्रम् इत्यादि स्तोत्रों का समयानुसार अभ्यास एवं पाठ करें, जिससे भारतीय परम्परा में श्रद्धा एवं उत्साह बना रहें।
8. गतवर्षों का पाठ्यक्रम छात्र को कण्ठस्थ है या नहीं ज्ञात करने हेतु परीक्षण (Assessment) किया जाएगा।
9. परीक्षक को विगत सभी वर्षों के पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने का पूर्ण अधिकार होगा।
10. सस्वर वेदाध्ययन करने वालों की संख्या शनैः शनैः क्षीण हो रही है। अतः श्रद्धावान्, मेधावान् एवं दार्ढ्य बुद्धि वाले छात्रों की वेदाध्ययन में रुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक प्रयत्न करना।

## महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

## (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

## अथर्ववेद शौनक शाखा पाठ्यक्रम

| वेदभूषण प्रथमवर्ष (प्रथमा प्रथमवर्ष / कक्षा VI समकक्ष) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्रिकालसन्ध्याविधि । अभिवादन । अग्निकार्य । यज्ञोपवीतधारण विधि । भोजनविधि । मङ्गलाचरण । अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड सम्पूर्ण एवं 2 काण्ड 3 अनुवाक पर्यन्त। माण्डूकीशिक्षा (मूलमात्र) | | | | | |
| **क्रमांक** | **माह / पक्ष** | **पाठ्यक्रम बिन्दु** | **मन्त्र संख्या** | **अंक** | **अध्ययन-अध्यापन** |
| 1 | प्रथम माह | त्रिकालसन्ध्याविधि, अभिवादन | | 10 | परम्परागत 16 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त सन्था प्रत्येक सन्था 4-4 बार होती है कुल 16 सन्था होती है। (7 बार बोलते है) प्रचलित 5 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त, अनुवाक सन्था प्रत्येक सन्था 1-1 बार होती है। सभी 10 बार बोलतें है। सम्पूर्ण मन्त्र अध्यापन 10 बार कराते हैं। प्रत्येक सन्था व आवृत्ति गुरु सान्निध्य में ही आवश्यक है। प्रत्येक अनुवाक के अध्ययन व सन्था के बाद आवृतिक्रम 10 दिन तक लगातार होना चाहिये। |
| 2 | द्वितीय माह | अग्निकार्य, यज्ञोपवीतधारण विधि | | 10 | |
| 3 | तृतीय माह | भोजन-विधि, मङ्गलाचरण - स्वस्ति + सांमनस्य + शान्तिसूक्त | 44 | 10 | |
| 4 | चतुर्थ माह | अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड 1 अनुवाक | 29 | 10 | |
| 5 | पञ्चम माह | अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड 2, 3 अनुवाक | 45 | 10 | |
| 6 | षष्ठ माह | अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड 4, 5 अनुवाक | 48 | 10 | |
| 7 | सप्तम माह | अथर्ववेद संहिता 1 काण्ड 6 अनुवाक। 2 काण्ड 1 अनुवाक | 60 | 0 | |
| 8 | अष्टम माह | अथर्ववेद संहिता 2 काण्ड 2 अनुवाक | 28 | 10 | |
| 9 | नवम माह | अथर्ववेद संहिता 2 काण्ड 3 अनुवाक । माण्डूकीशिक्षा (1 से 100 श्लोक) | 42 | 10 | |
| 10 | दशम माह | माण्डूकीशिक्षा (मूलमात्र) 111 - 186 श्लोक) | | 10 | |
| | | | 296 मन्त्र | 100 अंक | |

## महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

## (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

## अथर्ववेद शौनक शाखा पाठ्यक्रम

| वेदभूषण द्वितीयवर्ष (प्रथमा द्वितीयवर्ष / कक्षा VII समकक्ष) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथर्ववेद संहिता 2 काण्ड 3 अनुवाक से 5 काण्ड 1 अनुवाक पर्यन्त । गोपथब्राह्मण पूर्वभाग 1 प्रपाठक । निघण्टु प्रथम एवं द्वितीय अध्याय | | | | | |
| **क्रमांक** | **माह / पक्ष** | **पाठ्यक्रम बिन्दु** | **मन्त्र संख्या** | **अंक** | **अध्ययन-अध्यापन** |
| 1 | प्रथम माह | अथर्ववेद संहिता 2 काण्ड 3, 4 अनुवाक | 48 | 10 | परम्परागत 16 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त सन्था प्रत्येक सन्था 4-4 बार होती है कुल 16 सन्था होती है। (7 बार बोलते है) प्रचलित 5 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त, अनुवाक सन्था प्रत्येक सन्था 1-1 बार होती है। सभी 10 बार बोलतें है। सम्पूर्ण मन्त्र अध्यापन 10 बार कराते हैं। प्रत्येक सन्था व आवृत्ति गुरु सान्निध्य में ही आवश्यक है। प्रत्येक अनुवाक के अध्ययन व सन्था के बाद आवृतिक्रम 10 दिन तक लगातार होना चाहिये। |
| 2 | द्वितीय माह | अथर्ववेद संहिता 2 काण्ड 5, 6 अनुवाक | 60 | 10 | |
| 3 | तृतीय माह | अथर्ववेद संहिता 3 काण्ड 1, 2 अनुवाक | 73 | 10 | |
| 4 | चतुर्थ माह | अथर्ववेद संहिता 3 काण्ड 3, 4 अनुवाक | 78 | 10 | |
| 5 | पञ्चम माह | अथर्ववेद संहिता 3 काण्ड 5, 6 अनुवाक | 79 | 10 | |
| 6 | षष्ठ माह | अथर्ववेद संहिता 4 काण्ड 1, 2 अनुवाक | 76 | 10 | |
| 7 | सप्तम माह | अथर्ववेद संहिता 4 काण्ड 3, 4 अनुवाक | 93 | 0 | |
| 8 | अष्टम माह | गोपथब्राह्मण पूर्वभाग 1 प्रपाठक 1-20 कंडिका, निघण्टु 1, 2 अध्याय | | 10 | |
| 9 | नवम माह | अथर्ववेद संहिता 4 काण्ड 5, 6 अनुवाक; गोपथब्राह्मण 1 प्रपाठक 21-39 | 71 | 10 | |
| 10 | दशम माह | अथर्ववेद संहिता 4 काण्ड 7, 8 अनुवाक<br>अथर्ववेद संहिता 5 काण्ड 1 अनुवाक | 132 | 10 | |
| | | | 710 मन्त्र | 100 अंक | |

## महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

## (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

## अथर्ववेद शौनक शाखा पाठ्यक्रम

| वेदभूषण तृतीयवर्ष (प्रथमा तृतीयवर्ष / कक्षा VIII समकक्ष) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथर्ववेद संहिता 5 काण्ड के 2 अनुवाक से 7 काण्ड पर्यन्त । गोपथब्राह्मण पूर्व भाग 2 एवं 3 प्रपाठक सम्पूर्ण । निघण्टु 3 अध्याय । | | | | | |
| **क्रमांक** | **माह / पक्ष** | **पाठ्यक्रम बिन्दु** | **मन्त्र संख्या** | **अंक** | **अध्ययन-अध्यापन** |
| 1 | प्रथम | अथर्ववेद संहिता 5 काण्ड 2, 3, 4 अनुवाक | 189 | 10 | परम्परागत 16 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त सन्था प्रत्येक सन्था 4-4 बार होती है कुल 16 सन्था होती है। (7 बार बोलते है) प्रचलित 5 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त, अनुवाक सन्था प्रत्येक सन्था 1-1 बार होती है। सभी 10 बार बोलतें है। सम्पूर्ण मन्त्र अध्यापन 10 बार कराते हैं। प्रत्येक सन्था व आवृत्ति गुरु सान्निध्य में ही आवश्यक है। प्रत्येक अनुवाक के अध्ययन व सन्था के बाद आवृतिक्रम 10 दिन तक लगातार होना चाहिये। |
| 2 | द्वितीय | अथर्ववेद संहिता 5 काण्ड 5, 6 अनुवाक<br>अथर्ववेद संहिता 6 काण्ड 1 अनुवाक | 169 | 10 | |
| 3 | तृतीय | अथर्ववेद संहिता 6 काण्ड 2, 3, 4 अनुवाक | 98 | 10 | |
| 4 | चतुर्थ | अथर्ववेद संहिता 6 काण्ड 5, 6, 7 अनुवाक | 94 | 10 | |
| 5 | पञ्चम | अथर्ववेद संहिता 6 काण्ड 8, 9, 10 अनुवाक | 93 | 10 | |
| 6 | षष्ठ | अथर्ववेद संहिता 6 काण्ड 11, 12, 13 अनुवाक | 139 | 10 | |
| 7 | सप्तम | अथर्ववेद संहिता 7 काण्ड 1 अनुवाक<br>गोपथब्राह्मण पूर्वभाग 2 प्रपाठक, (1-23 कंडिका)<br>निघण्टु 3 अध्याय | 28 | 0 | |
| 8 | अष्टम | अथर्ववेद संहिता 7 काण्ड 2, 3, 4 अनुवाक<br>गोपथब्राह्मण 3 प्रपाठक (1-24 कंडिका) | 83 | 10 | |
| 9 | नवम | अथर्ववेद संहिता 7 काण्ड 5, 6, 7 अनुवाक | 98 | 10 | |
| 10 | दशम | अथर्ववेद संहिता 7 काण्ड 8, 9, 10 अनुवाक | 77 | 10 | |
| | | | 1068 मन्त्र | 100 अंक | |

# महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

## (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

## अथर्ववेद शौनक शाखा पाठ्यक्रम

| वेदभूषण चतुर्थवर्ष (पूर्वमध्यमा प्रथमवर्ष / कक्षा IX समकक्ष) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथर्ववेद संहिता 8 काण्ड से 10 काण्ड 5 अनुवाक । गोपथब्राह्मण 4 तथा 5 प्रपाठक । निघण्टु 4, 5 अध्याय | | | | | |
| **क्रमांक** | **माह / पक्ष** | **पाठ्यक्रम बिन्दु** | **मन्त्र संख्या** | **अंक** | **अध्ययन-अध्यापन** |
| 1 | प्रथम | अथर्ववेद संहिता 8 काण्ड 1, 2 अनुवाक | 100 | 10 | परम्परागत 16 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त सन्था प्रत्येक सन्था 4-4 बार होती है कुल 16 सन्था होती है। (7 बार बोलते है) प्रचलित 5 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त, अनुवाक सन्था प्रत्येक सन्था 1-1 बार होती है। सभी 10 बार बोलतें है। सम्पूर्ण मन्त्र अध्यापन 10 बार कराते हैं। प्रत्येक सन्था व आवृत्ति गुरु सान्निध्य में ही आवश्यक है। प्रत्येक अनुवाक के अध्ययन व सन्था के बाद आवृतिक्रम 10 दिन तक लगातार होना चाहिये। |
| 2 | द्वितीय | अथर्ववेद संहिता 8 काण्ड 3, 4 अनुवाक | 100 | 10 | |
| 3 | तृतीय | अथर्ववेद संहिता 8 काण्ड 5 अनुवाक।<br>निघण्टु 4 अध्याय | 93 | 10 | |
| 4 | चतुर्थ | अथर्ववेद संहिता 9 काण्ड 1, 2 अनुवाक | 104 | 10 | |
| 5 | पञ्चम | अथर्ववेद संहिता 9 काण्ड 3, 4 अनुवाक | 159 | 10 | |
| 6 | षष्ठ | अथर्ववेद संहिता 9 काण्ड 5 अनुवाक।<br>निघण्टु 5 अध्याय | 50 | 10 | |
| 7 | सप्तम | अथर्ववेद संहिता 10 काण्ड 1, 2 अनुवाक | 116 | 0 | |
| 8 | अष्टम | गोपथब्राह्मण 4 प्रपाठक (1-24) कंडिका | | 10 | |
| 9 | नवम | अथर्ववेद संहिता 10 काण्ड 3, 4 अनुवाक | 173 | 10 | |
| 10 | दशम | अथर्ववेद संहिता 10 काण्ड 5 अनुवाक<br>गोपथब्राह्मण 5 प्रपाठक (1-25 कंडिका) | 61 | 10 | |
| **नोट -** कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी। | | | 956 मन्त्र | 100 अंक | |

## महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन
## (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
## अथर्ववेद शौनक शाखा पाठ्यक्रम

| वेदभूषण पञ्चमवर्ष (पूर्वमध्यमा द्वितीयवर्ष / कक्षा X समकक्ष) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथर्ववेद संहिता 11 काण्ड से 15 काण्ड 2 अनुवाक पर्यन्त । गोपथब्राह्मण उत्तरभाग 1, 2 एवं 3 प्रपाठक । प्रश्नोपनिषद् (मूलमात्र) | | | | | |
| **क्रमांक** | **माह / पक्ष** | **पाठ्यक्रम बिन्दु** | **मन्त्र संख्या** | **अंक** | **अध्ययन-अध्यापन** |
| 1 | प्रथम | अथर्ववेद संहिता 11 काण्ड 1, 2 अनुवाक।<br>गोपथब्राह्मण उत्तरभाग 1 प्रपाठक 1-23 कंडिका | 150 | 10 | परम्परागत 16 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त सन्था प्रत्येक सन्था 4-4 बार होती है कुल 16 सन्था होती है। (7 बार बोलते है) प्रचलित 5 सन्था पद्धति पाद-अर्धऋक्-मन्त्र-सूक्त, अनुवाक सन्था प्रत्येक सन्था 1-1 बार होती है। सभी 10 बार बोलतें है। सम्पूर्ण मन्त्र अध्यापन 10 बार कराते हैं। प्रत्येक सन्था व आवृत्ति गुरु सान्निध्य में ही आवश्यक है। प्रत्येक अनुवाक के अध्ययन व सन्था के बाद आवृतिक्रम 10 दिन तक लगातार होना चाहिये। |
| 2 | द्वितीय | अथर्ववेद संहिता 11 काण्ड 3, 4 अनुवाक | 110 | 10 | |
| 3 | तृतीय | अथर्ववेद संहिता 11 काण्ड 5 अनुवाक।<br>अथर्ववेद संहिता 12 काण्ड 1 अनुवाक | 116 | 10 | |
| 4 | चतुर्थ | अथर्ववेद संहिता 12 काण्ड 2, 3 अनुवाक | 115 | 10 | |
| 5 | पञ्चम | अथर्ववेद संहिता 12 काण्ड 4, 5 अनुवाक | 126 | 10 | |
| 6 | षष्ठ | अथर्ववेद संहिता 13 काण्ड 1 अनुवाक<br>गोपथब्राह्मण उत्तर भाग 2 प्रपाठक (1-24 कंडिका) | 60 | 10 | |
| 7 | सप्तम | अथर्ववेद संहिता 13 काण्ड 2, 3 अनुवाक | 72 | 0 | |
| 8 | अष्टम | अथर्ववेद संहिता 13 काण्ड 4 अनुवाक<br>प्रश्नोपनिषद् (मूलमात्रम्) | 56 | 10 | |
| 9 | नवम | अथर्ववेद संहिता 14 काण्ड 1, 2 अनुवाक | 139 | 10 | |
| 10 | दशम | अथर्ववेद संहिता 15 काण्ड 1, 2 अनुवाक<br>गोपथब्राह्मण उत्तरभाग 3 प्रपाठक (1-23 कंडिका) | 230 | 10 | |
| **नोट -** कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी। | | | 1174 मन्त्र | 100 अंक | |